तितली पार्क

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू भोपाल

भदभदा रोड़ भोपाल मध्यप्रदेश

बटरफ्लाई एक अत्यंत आर्कषक एवं खूबसूरत जीव है जो कि मुख्यतः पौधों पर निर्भर रहती है तथा पास्थितिकीय तंत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक फूल से दूसरे फूल तक पराग कणों तक ले जाकर पुष्पन में भी मदद करती है। प्रत्येक तितली किसी विशेष प्रजाति के पौधों / फूलों के लिये अपने जीवन चक्र की पूर्व अवस्था में भी वाहक होती है। तितलियॉ पौधों के ऊपर फीडिंग एवं ब्रीडिंग दोनो के लिये ही निर्भर रहती है। तितलियॉ एंटार्कटिका के अलावा समूचे विश्व में पाई जाती हैं। विश्व में पाई जाने वाली कुल 18500 प्रजातियों में से भारत में 1500 प्रजातियॉ पाई जाती हैं। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में लगभग 24 तितलियों की विभिन्न प्रजातियॉ पाई जाती हैं।

वन विहार तितली पार्क वन विहार राष्ट्रीय उद्यान का संपूर्ण क्षेत्र 445.21 हैक्ट. क्षेत्र संरक्षित होने के कारण तितलियों के संवर्धन हेतु एक आदर्श स्थान है। वन विहार में प्राकृतिक रूप से पौधों एवं वृक्षों की विविधता अधिक है जो तितलियों के प्राकृतिक होस्ट है अथवा पोषण करते हैं। वन विहार में तितली पार्क 60X60 वर्ग मी. के क्षेत्र में बनाया गया है। यह प्राकृतिक रूप से खुला क्षेत्र है जहॉ पर तितलियों को आकर्षित करने के लिये होस्ट प्लांट्स एवं नेक्टर प्लांट्स लगाऐ गये है ताकि तितलियॉ अपना सामान्य जीवन चक्र इसी स्थल पर पूर्ण कर सकें। तितली पार्क में विभिन्न प्रकार की अनुपयोगी वस्तुओं का भी उपयोग किया गया है।

वैज्ञानिक वर्गीकरण

तितली जीव जगत के कीट परिवार का सदस्य है ।

वर्गीकरण –

- किंगडम (जगत) : एनिमेलिया
- क्लास (वर्ग) : इन्सेक्टा
- आर्डर (गण) : लेपिडोप्टेरा

जीवन चक्र

तितली का जीवनचक्र अंडा, लार्वा, इल्ली, प्यूपा तथा तितली अवस्थाओं में पूर्ण होता है

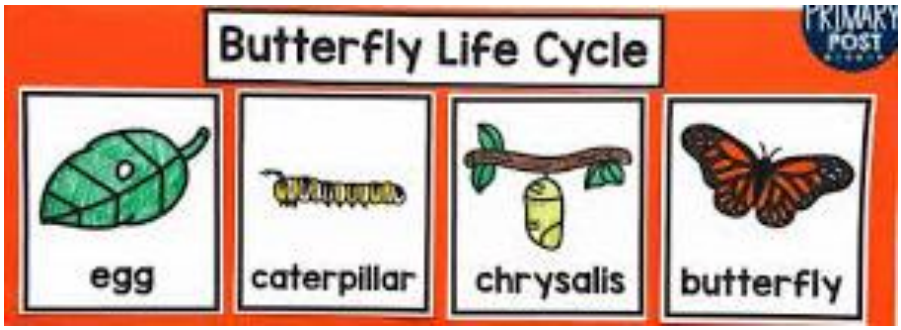

सामान्य जानकारी

- धरती पर 24000 से भी ज्यादा प्रकार की तितली मौजूद हैं ये अंटार्कटिका को छोड़कर हर महाद्वीप पर पाई जाती हैं।
- सबसे बड़ी तितली 12 इंच की और सबसे छोटी तितली आधे इंच की है।
- तितली के पंखों के आर– पार देखा जा सकता है, इनके 4 पंख होते हैं। लेकिन धरती की सबसे बड़ी तितली के 12 पंख हैं।
- तितली की ऑख में 6000 लैंस होते है जिनकी मदद से ये अल्ट्रावायॅलेट किरणे तक देख सकती हैं।
- तितली किसी भी चीज का स्वाद पैरों से चखती है।
- तितली भी मधुमक्खियों की तरह फूलों से नेक्टर चूसती है और जिंदा रहती है।
- तितलियों का जीवन चक्र 2 से 4 हफ्तों का होता है, लेकिन कुछ प्रजातियॉ 9 महीने तक जिंदा रहती हैं।
- तितलियॉ सुन नहीं सकती, बहरी होती हैं लेकिन ये बाइब्रेशन महसूस कर सकती हैं।
- तितलियॉ हमेशा पत्तों पर अंडे देती हैं, ये अपने पैरों से पता लगा लेती हैं कि ये पत्ता अंडे देने के लिये सही है या नहीं।

शारीरिक संरचना

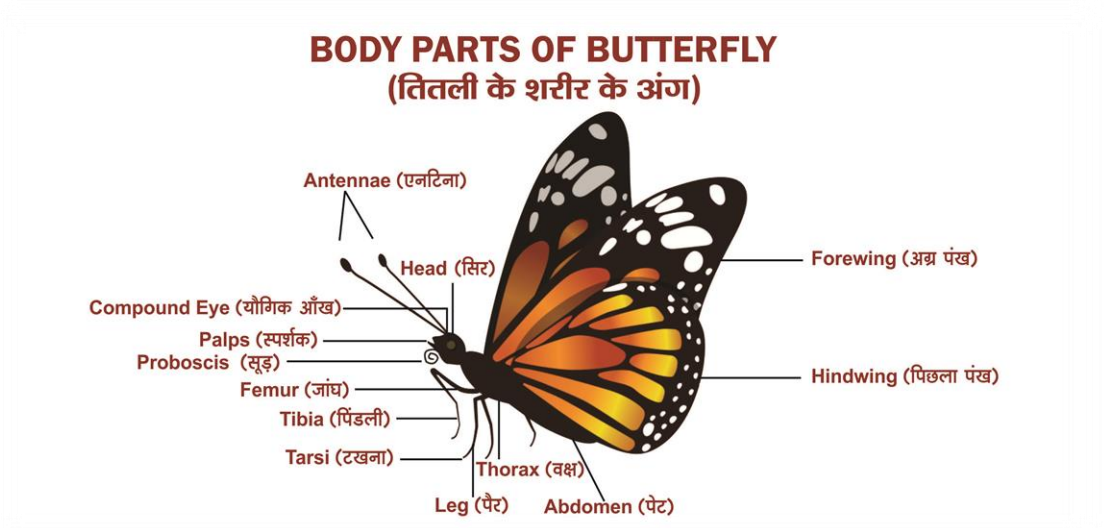

वन विहार की तितलियॉ –

वन विहार में प्रमुखतया ब्लू टाइगर, प्लेन टाइगर, स्ट्रिप्ड / कॉमन टाइगर, कॉमन बेंडड ऑल, कॉमन इवनिंग ब्राउन, कॉमन ग्रास यलो, कॉमन इंडियन क्रो, कॉमन जेजबेल, ग्राम ब्लू, ग्रेट एगफ्लाई, ग्रे पैंसी, लेमन पैंसी, ब्लू पैंसी, येलो पैंसी, लेसर ग्रास ब्लू, लेसर थ्रीरिंग, लाइम बटरफ्लाई, मोटल्ड इमिग्रेंट, वन स्पॉट ग्रास यलो, राउंडेड पैरोट, टेललेस लाइन ब्लू, टॉनी कोस्टर, टाइनी ग्रास ब्लू इत्यादि तितलियाँ पाई जाती है।

ब्लू टाइगर

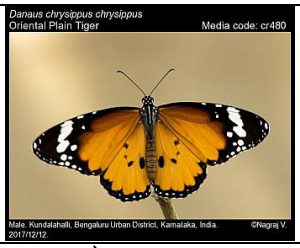

प्लेन टाइगर

कॉमन बेंडड ऑल

कॉमन इवनिंग ब्राउन

कॉमन ग्रास यलो

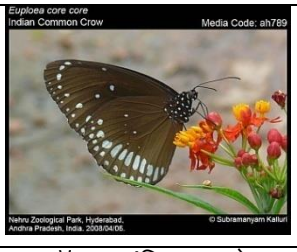

कॉमन इंडियन क्रो

ओरियंटल ग्राम ब्लू

ग्रेट एगफ्लाई

ग्रे पैंसी

लेमन पैंसी

ब्लू पैंसी

यलो पैंसी

लेसर ग्रास ब्लू

लेसर थ्री रिंग

कॉमन जेजबेल

स्ट्रिप्ड कॉमन टाइगर

टॉनी कोस्टर

लाइन ब्लू

राउंडेड/स्ट्रिप्ड पैरोट

टाइनी ग्रास ब्लू

होस्ट प्लांट्स –

तितलियॉ पुष्पीय पौंधों से लेकर झाड़ियों, जड़ी बूटियों के पौधों तथा वृक्षों को होस्ट के रूप में उपयोग करती हैं। जैसे पलाश, सीडा, करौंदा, कनक चंपा, दूधी, सना, बज्रदंती, बारलेरिया, लाजवंती, गुलतुर्रा, निरगुड़ी, अरंडी, करंज, कौरव पांडव बेल, चकोड़ा, बेर, हाथी सूड़ी, कानफुली, मीठा नीम, अडूसा इत्यादि

Host Plants

सीडा	करंज	करौंदा	दूधी
एक्सलेपिया	हाथी सूडी	लाजवंती	कनक चंपा
	कानफुली	गुलतुर्रा	वज्रदंती
बेर	कौरव पांडव बेल	पलाश	बारलेरिया
सना	रूऐलिया	निरगुडी	चकोड़ा

नेक्टर प्लांट्स

वयस्क तितलियॉ फूलों के रस को नेक्टर प्लांट्स से प्राप्त करती हैं जिसमें प्रमुख हैं – सूरजमुखी, लेंटाना, जासौन, स्नेकवीड, लांबडी, स्यूडोरान्थेमम, आक, सदासुहागन, कासमास नीबू, मधुमालती, लेंटाना, अपराजिता, गेंदा, सेवंती, ट्राइडेक्स, जीनिया इत्यादि।

जासौन	स्नेकवीड	लांबड़ी	स्यूडोरान्थेमम
आक	सदासुहागन	कासमास	नीबू
मधुमालती	अपराजिता	लेंटाना	गेंदा
जीनिया	ट्राईडेक्स	सेवंती	लिली

तितलियों का पारिस्थितकीय तंत्र में महत्व

तितलियों की उपस्थिति स्वस्थ पर्यावरण एवं बेहतर पारिस्थितकीय तंत्र का प्रतीक है। जिन क्षेत्रों में तितलियॉ बहुतायत पायी जाती हैं वहॉ अकशेरूकीय प्राणियों की संख्या भी अधिक होती है। यह पर्यावरण की दृष्टि से परागण एवं कीट नियंत्रण में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

शैक्षणिक महत्व

तितलियों को देखना अत्यंत रोमांचकारी एवं आर्कषक होता है इसके माध्यम से विद्यार्थियों को पर्यावरण का महत्व अच्छे से समझाया जा सकता है विशेषकर बच्चे इनको देखकर बहुत उत्साहित होते हैं तथा जीवनचक्र में किस तरह से तितली अंडे से लार्वा, लार्वा से प्यूपा एवं प्यूपा से वयस्क तितली किस तरह से बनती है यह प्रकृति का एक अद्भुत चमत्कार ही प्रतीत होता है।

बचाव एवं संवर्धन

- तितलियों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना तथा जानकारियों को आपस में बॉटना।
- प्राकृतिक आवास स्थलों एवं पर्यावरण का संरक्षण।
- होस्ट प्लांट्स एवं नेक्टर प्लांट्स का अपने घरों एवं खाली जगहों पर रोपण।
- रासायनिक एवं कीट नाशकों का प्रयोग बगीचों में अत्यंत सीमित करना।